भोजपुरी काव्य संग्रह

पंखिया जनि काटऽ

कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

पंखिया जनि काटऽ

भोजपुरी काव्य-संग्रह

रचयिता

कनक किशोर

श्री नर्मदा प्रकाशन

www.bhojpurisahityangan.com

पंखिया जनि काटऽ

(भोजपुरी काव्य संग्रह)

ISBN - 978-93-342-4946-0
श्री नर्मदा प्रकाशन
प्लॉट नं. 11 त्रिवेणी नगर, लखनऊ (उ.प्र.)
चलभाष - 6391393776
© लेखकाधीन
संस्करण - प्रथम (2025)
मूल्य - रु. 250.00 मात्र
आवरण - गूगल से साभार

Written by Kanak Kishore

www.bhojpurisahityangan.com

अर्धांगिनी मधुबाला, जे आपन दायित्व के निष्ठापूर्वक निर्वहन करत एगो आदर्श नारी, आदर्श माई, आदर्श पत्नी, आदर्श बहू के रूप में हमरा परिवार में उपस्थित बाड़ी के सस्नेह समर्पण के साथे सम्पूर्ण नारी शक्ति के समर्पित।

– कनक किशोर

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

मेहरारू के देह के
भीतर के मेहरारू के आवाज

'कठपुतरी' के बाद नारी शक्ति के केंद्र में रखि ई दूसरका काव्य संग्रह ह 'पंखिया जनि काटऽ'। रूसो के कहल ह 'you are born free but you are everywhere in chains.' ई कथन मानव जाति खातिर कहल गइल बा। एह कथन में गहराई आ विस्तार दूनों बा। अध्यात्मिक अर्थ में मानव जीवन के सच्चाई इहे ह। नारी जीवन के सांसारिक सत्य इहे ह कहल जा सकेला ओकरा पर थोपल सामाजिक बंधन देखि के त कुछ गलत ना होखी। एह से बढ़ि के महिला खातिर सच्चाई ई ह कि 'you are born as child but society make you female for their own purposes.' स्त्री विमर्श कुछ अउर ना पुरुष वर्ग के सामने स्त्रीयन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, शैक्षिक आ लैंगिक समानता खातिर उठावल आवाज के नाम ह। परितोष बैनर्जी एह संबंध में कहले बाड़ें – 'नारीवाद एक विशिष्ट मतवाद है, जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि स्त्रियों को इस पुरुष शासित समाज में निम्न स्थान दिया गया है और पुरुषों के साथ समान अधिकार एवं प्रतिष्ठा मिलनी चाहिए। अन्य शब्दों में, नारीवाद उस प्रवृत्ति आ द्योतक है, जो लिंग पर आधारित पारंपरिक शक्ति-व्यवस्था का पुनर्विन्यास चाहती है।' समाज इक्कीसवीं सदी में आधी आबादी के एह समस्या से उबरल नइखे, ओकर आवाज के समाधान निकलल नइखे। उन्हिन के स्वैच्छिक, मनपसंद सहयोग आ सहभागिता नइखे मिलल आजु ले। आजुवो हमनी के समाज में शिक्षा, आर्थिक स्वावलंबन, लोकतांत्रिक अधिकार, सुरक्षा आदि मामलन में ओहनी के हक जे चाहीं ऊ नइखे मिलल, जेकरा से अपना के ठगल महसूस करत बाड़ी सं। आधी आबादी एह असंतुलन, जोर-जबरदस्ती, पाखंड, उत्पीड़न, अन्याय आ हिंसा से त्रस्त बाड़ी सं। आपन पहचान आ सपना खातिर आजुवो ओकरा भीतर बेचैनी बा, छटपटाहट बा। ई समाज के लउकत बा बाकिर चुप्पी। एह सच्चाई के

www.bhojpurisahityangan.com

युवा स्त्री अव स्वीकार करे के तइयार नइखी सं। इहे स्थिति के, असंतोष के देखत युवा कवयित्री ज्योति रीता मनुष्यता के खेती समाज में कइल चाहत बाड़ी जहाँ सभका बराबरी के भागीदारी होखे आ आजु के एह असंतुलन के सामाजिक परिवेश के देखि एगो युवा स्त्री के मानसिकता सामने रखत कहत बाड़ी –

एक युवा स्त्री निगल लेना चाहती है
अपनी ग्रीवा में समस्त पुरुष सत्ता
ताकि जन्म दे सके समरूप सत्ता
बने नया इतिहास
लिखी जाए नई इबारत।

ओहि पहचान आ समता के खोज में नारी के जीवन संघर्ष वनि के रह जाला।सदियन से ई पहचान खातिर लड़ाई चल रहल बा बाकिर समाज देह में उलझि रह जाता, तेयाग अनदेखा रह जाता। नारी के देह के सुंदरता में भुलाइल पुरुष समाज ओकर जीवन संघर्ष अनदेखा कर देत बा। आपन देह के भूख ओकरा लउकत बा मेहररूयन के दुख ना। जेकर प्रतिफल बा कि समाज के अधूरापन दूर नइखे हो पावत।एक पक्ष ओकर सुंदरता में, भोग में भुलाइल रहत बा त दूसरका जीवन संघर्ष के रोना रोवत रहत बा तऽ स्वस्थ समाज के, पूर्ण समाज के परिकल्पना कइसे पूरी? कवि नंद चतुर्वेदी मीरा के बारे में कहले बाड़ें 'प्रेम भी है और प्रज्ज्वलन भी' बाकिर ई कथन हर नारी के जीवन सत्य ह। मीरा के प्रेम अलौकिक ह जे नारी जाति खातिर दैहिक बन के रह जाला पुरुष के चलते आ ओकर तेयाग, संघर्ष, दुख, प्रज्ज्वलन के कारण बनि जाला जेकरा में जरत रहले उमिर भर, जिनिगी के अंत ले। नारी के अंदर के प्रज्ज्वलन कोइला के आंच अस धधके ना। ऊ बोरसी के आगि जस राख के अंदर गहराई में धीमे-धीमे सुलगत रहेला उहो बिना धुआं के। नारी के भीतर के प्रज्ज्वलन हमेशा बनल रहेला, कबो बुझाय ना। नारी पहचान खातिर ताउम्र रोशनी के तलाश में रहले बाकिर तम से बहरी ना निकल पावे। बेसी उचित ई होई कहल समाज ना निकले देवे। आजो देखे में आवेला कि ओकरा जीवन में रचल-बसल तम खातिर ओकर जातियो कम जिम्मेवार नइखे। ऊ अपना पहचान खातिर समता आ स्वतंत्रता के चाह रखलस, उहे ओकर लक्ष्य रहल बाकिर पुरुष वर्ग के ओकर बरावरी के बाति फूटलो आँखि ना सुहाला। बर्चस्व आजुवो मरद जाति के बा त मेहररूयन के खुला आकाश आ ओकरा हिस्सा के धूप कइसे मिली? ई देखि इहे बुझात बा कि आशा-निराशा के बीच फँसल नारी के

www.bhojpurisahityangan.com

जिनिगी के प्रज्ज्वलन के कारण समय, समाज आ पुरुष बेवस्था से उपजल क्लेश आ छल-कपट बा। सामाज के इहे सोच आ स्थिति देखि वैदेही आजुवो अपना जीवन मुक्ति के सपने ना देखि देह मुक्ति के सपना देखेली सं। देह मुक्ति के बिना जीवन मुक्ति संभवो नइखे। बदलत समय में ऊ सुतल नइखी सं। तम भरल जीवन में उजाला के रेखा खींचे के भरपूर कोशिश करत बाड़ी स, कहत बाड़ी स 'गा जिंदगी गा', आशा बलवती बा, देर-सवेर लड़ाई जीतऽव एकर विसवासो बा आँखिन में। बाकिर अपने जव हाथ छोड़ देला, उहे दुख के कारण हो जाला त आपसी रिसता के छद्म लोकतंत्र में अबला के सपना कइसे पूरा होखी। देश के संविधान त आधी आबादी के समता आ स्वतंत्रता के अधिकार देलेहीं बा बाकिर सहचर ओह समता आ स्वतंत्रता के लूटेरा बनल बा, भोग्या से, एगो वस्तु से ऊपर समझे के तइयार नइखे त नारी के स्थिति में इजाफा कइसे होखे? समाज आ धर्मगुरु के ई देखियो के चुप्पी के का कहल जाई, ई अव कहे के जरूरत नइखे बुझात हमरा काहे कि ऊ लोगिन चाहेला कि नारी का पहिने का ना पहिने, का करे का ना करे, कहाँ जाए कहाँ ना जाए, का बोले का ना बोले ऊ सब पर उन्हिन के अधिकार रहे। आज समय अइसन बा कि नारी स्वतंत्रता के बड़े-बड़े बात होता दिखावे खातिर बाकिर नारी के घर-बाहर स्वतंत्रता देवे के बात होता तब खानदान के इज्जत आड़े आ जात बा, खानदान के भविष्य के दारोमदार त मरदन के कान्हि बा। सांच त सांच होला। ओकरा के स्वीकार करे के चाहीं। दुनिया नारी शक्ति के बराबरी के बिना अधूरा बा। ई अधूरापन एह से बा कि हमनी के बनावल दुनिया ह। दुनिया बदले के होखी त बदलाव टाटा-बिड़ला, अडानी-अंबानी, सरकार के चहला आ बदले से ना आई। बदलाव हमनी के बदलला से आई। नारी शक्ति के बुझात होई आपन निराशा दूर करे, आपन सपना पूरा करे खातिर आजु ले लड़नी बाकिर हाथे का आइल, शत्रु कहाँ हारल, कहाँ समझौता करे के तइयार बा ऊ, आजुवो लोग पूछत बा दुनिया कहाँ बदलल। बातों सही बा तोहार बाकिर हथियार डालल कायरता होखी। बदलाव आइल बा, सपना जगा के रखऽ, आगे रोशनी भेंटाई बिसवास रखऽ। आस जिनिगी ह। तूहूं देखऽ, कवि के आगे फह फाटत, लाली निकलत नजर आवत बा।

कवि उहे होला जेकरा देश आ समाज लउकेला। लिंग भेद ना लउके। संभावना लउकेला। सपना लउकेला। अम्लान रोशनी लउकेला। ओहि रोशनी में शोषण, झूठ आ भेदभाव देखिके मानवीयता के उगावे खातिर कविता लिखेला। जगावेला आ अपना हक हुकूक खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

उर्जास्वित करेला लोगिन के। कविता के माध्यम से आधा आवादी के बाति रखि ओकरा पक्ष में खड़ा होखे के एगो छोट प्रयास भर ह ई संकलन। मेहरारू के देह भीतर बइठल मेहरारू के आवाज कविता होला। स्त्री एगो मुकम्मल कविता होली सं। जेह में स्त्री-जीवन के लेखा-जोखा, दैनिक-सांस्कृतिक संघर्ष गाथा अउर द्वंद दार्शनिक मुद्रा में दर्ज होला। ओहिजा स्त्री के जन्म लेवे, बने, उठे-बइठे आ खत्म हो जाए के निज-जीवन के कहानी होला। जे यह कविता के एगो जीवनी भा जीवनी-संस्मरण से परिचित करावेला। कविता के बुनावट अइसन कि एको वाक्य अधिका ना लउके ओह में। कसावट अइसन कि एगो 'हूँ', आ 'मैं' के रख देला से कविता के बिगड़ जाए के डर लागेला। समय बदलल बाकिर आजुवो सामाजिक संरचना में स्त्री के आपन अस्तित्व के मुकम्मल पहचान नइखे मिलल तव त ओकरा भीतर से उठत आवाज कहत बा कि

विधाता देले
हमरा के
ई देह
तिरिया जनम

आ हम
जिनिगी भर
ढोवत रहनीं
अपने पीठपर
आपन भार

आ तू
लिखत रहलऽ
कविता, कहानी
हमरा के नायिका बना

कागज के जगह
हमरा के
जिनिगी में नायिका

www.bhojpurisahityangan.com

बनइतऽ त
आज हम आपन पहचान
ना खोजतीं
तोहरा समाज में

हमरो जिनिगी में
धुंध-कोहरा
छंट जाइत

पहचान
हमरो मिल जाइत।

स्त्री विमर्श पर एगो कवि के कविता लिखत देखि कहल जा सकत बा/आवाज उठ सकत बा 'जेकरा पर बितेला, उहे पीड़ा बुझेला' सांच ह फेरू एगो मरद गीत गावत बा मेहरारू के, वाह भाई वाह ई त उहे नू भइल कि बांझ प्रसुति के दरद बेयान करत बा। वागर्थ के संपादक शंभुनाथ के कहल ह कि 'जदी ई सिद्धांत बना लेल जाए कि जेकरा ऊपर बितेला खाली उहे ओह पीड़ा के बढ़िया से व्यक्त कर सकेला त ई पीड़ा के नाकाबंदी कहल जाई। लोग दूसरा के दुख-विपत्ति में साझेदारी से किनारा कर ली। समाज में कुछु साझा ना बांचल रही।' नारी विषयक कविता लिखे वाला कवि मरद होखे के पहिले 'मनुष्य' होला जे नजदीक से देखले अनुभव कइले रहेला आधी आबादी के दर्द के। ओकर साझा के दर्द ह नारी के दर्द आ मनुष्य होके लिखलके कविता बढ़िया कविता होला। तबहीं मानवीय धर्म के साथे कवि धर्म के पालन हो पावेला। संकलित कविता सब आधी आबादी के आवाज ह कि ना ई अब त पाठक बतइहें। संकलन पाठक के हाथे। पाठकीय प्रतिक्रिया के इंतजार रही।

- कनक किशोर
राँची (झारखंड)

www.bhojpurisahityangan.com

अनुक्रमणिका

क्रं.	शीर्षक	पृ.सं.
01.	नागफनी	11
02.	देह – 1	17
03.	देह – 2	19
04.	देह – 3	20
05.	देह – 4	22
06.	देह – 5	24
07.	देह – 6	26
08.	देह – 7	29
09.	देह – 8	31
10.	देह – 9	33
11.	देह – 10	35
12.	देह – 11	36
13.	देह – 12	38
14.	देह – 13	39
15.	देह – 14	41
16.	देह – 15	43
17.	देह – 16	46
18.	देह – 17	48
19.	देह – 18	50
20.	देह – 19	52
21.	देह – 20	53
22.	देह – 21	55
23.	हमार हिस्सा	74
24.	मरद के अंकगणित	76
25.	नारी	79
26.	मौन – 1	81
27.	मौन – 2	82
28.	कारावास	83
29.	कोख	85
30.	सोना के पिंजरा	88
31.	विदाई	90
32.	देह राग	91
33.	पंखिया जनि काटऽ	92
34.	मरदा अवहूं तू समझऽ	94

www.bhojpurisahityangan.com

नागफनी

नारी
भगवान के दोष दीं कि
मरद जाति के?
भा तोहरे के?
ई एगो यक्ष प्रश्न बा
आजुवो
समाज के सामने
हमरा समाने

राजा के रानी बनलू
भा महाराजा के महारानी
मन में डर बइठल रहल
कि कवनो नारी ना बनके
आ जाए पटरानी
तोहरा सामने

भगवान के दरबार में
कबो देवदासी बनि
पुजारी के भोग्या बनलू
त कबो पुरुष प्रधान समाज
नगर वधू बना
बइठा देलस लाल कोठी में
जे रख दिहलस
जगर-मगर चमकत दुनिया में
तम भरल जिनिगी
तोहरा सामने

www.bhojpurisahityangan.com

दरद से त तोहार
गहिर आ आदिम रिसता
रहल बा
प्रजनन पीड़ा
संतति के विछोह के दरदो अधिका
तोहरे हिस्सा में
तोहरे अंचरा में
डाल देले बाड़े
भगवान

तोहार सहनशीलता के
तोहार कमजोरी
तोहार नियति
मानि पुरुष समाज
एगो अलगे दर्जा
देले बा
जेकरा के कहल जाला
अबला

एह सामाजिक अवधारणा के पीछे
देखबू
त प्रत्यक्ष भा परोक्ष रूप से
तोहरो जाति के
मजबूत हाथ बा

कह सकत बाड़ू
औरत खुद
पुरुष के लठैत बनि
अपना मुखियई के चक्कर में

www.bhojpurisahityangan.com

अपने जाति के
एह दुर्दशा खातिर
जिम्मेदार बाड़ी
त गलत ना होखी

तू खुद अपना संतति के
अपना देवरानी के
अपना छात्र के
अपना सखि - सलेहर के
कहले रहू कि
नारी होके दरद से घबराये के ना
बहुत कुछ बर्दाश्त करे के पड़ेला
एगो नारी के
आ इहे कहलका तोहरा जाति
के भीतर
बीज बो जाला
डर के
मार देला
तोहरा भीतर बइठल
सबला के

दरद पी जाए के
चुपचाप सह जाए के
ई पाठ
हर नारी पढ़ल बाड़ी
अपना से बड़ से
आ परोस देली
सौंप देली

www.bhojpurisahityangan.com

कबो प्यार से
कबो अधिकार से
कबो दुत्कार के
अपना आगे के पीढ़ी के
पुचकार के

सांच कहीं
त ई परंपरा
बन गइल बा
आ नारी एकरा के
निर्वहन कर रहल बाड़ी
जीवनचर्या समझ
सदियन से

समय बदलल
समाज बदलल
कानून बदलल
साथे बदलल
स्त्री दमन के हथकंडों
ना बदलल त
नारी के कहानी
जे नागफनी जस होला
जेकरा देखलो से
दरद के अहसास होला
काँट के चुभन
महसूस होला

www.bhojpurisahityangan.com

नारी
पुरुष के जायदाद
ना होले
त्याग के प्रतिमूर्ति होले
वारिस के रूप में
खनदान के
बंश चिराग देले
सेवा आ समर्पण
के प्रतिरूप होले
तबो पुरुष के नजर में
भोग्या
एगो देह से बेसी
स्थान ना बना पवलस
तब त मरद
जब चाहे भोगे के
समान आजुवो समझत बा

समाज तोहरा के
जगह नइखे देत
तोहरा हिस्सा के आकाश
नइखे देत
तोहरा हिस्सा के धूप
खुद भूप बनि
लूट रहल बा
त अपना हक खातिर
तू लड़बू-मरबू ना
ना त के लड़ी?
अंतिम सांस ले लड़ऽ
पुरुष से, भगवान से

www.bhojpurisahityangan.com

अपनो जाति से
ई जिनिगी समर ह
लड़ऽ, लड़त रहऽ
इहे जीवन राग ह
एगो नारी के
अबला के बल
सबला बनि देखावऽ
शेष जीवन के बचा लेवे के
कवनो दूसर विकल्प नइखे
इहे सच्चाई ह
समझऽ आ
जीवन समर में
उतर जा, कमर कस लऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 1

नारी के देह से
अलग क के
ना केहू देखल
काहे?

नारी घर के मेंह
तबहूं
नारी से नेह के
कारण
खाली देह
काहे?

प्रश्न
नारी के मन में,
ना सोचें
पुरुष देहिया से
हटके
काहे?

हमरा देहिया में
मनो बा
ई ना लउकेला
मरद के
काहे?

www.bhojpurisahityangan.com

अतने नेह बा
देहिया से
हमरा त
तबो ना बुझऽ
ओकरा के देह
काहे?

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 2

नारी के देह
सुंदर
मनवो सुंदर,
देहिया देखलऽ
मनवा ना

चामे में भुलाइल
देह में मेंह गाड़ि
ता जिनिगी
रउंदत रहलऽ
देहिया के
अपना आँगन के
खरिहान में

देहिया के दंवरी के
उपहार
धिया, पूत,
आ मरद जाति
तू रोप दिहलऽ
तन भीतर
हमरा मन में
नागफनी
सुनर चाम
तन के
तोहरा हिस्सा,
हमरा हिस्सा में
मन के भीतर
पसरल
नागफनी के चुभन।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 3

हमार देह
नेह के भूखल

आ तूं
देह के भूखल

हम तोहरा में देखनीं
देव के रूप
पूजनीं

आ तूं
कहां देखलऽ हमरा के
एगो देह से
अलगा

तोहरा नजर में
हम एगो
भोग के वस्तु

ओहि नजर से
बांचे खातिर
हमार कवनो उतजोग
ना आइल
काम

तोहार कामुक नजर
साड़ी से तोपल

www.bhojpurisahityangan.com

देह के
बेधत रहेला
जे मन में चुभत रहेला
नागफनी बनि

जवन नजर में नेह
देखल चहनीं
ऊ हमरा मन के
रेगिस्तान बना
कैक्टस के खेती
करत मिलल।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 4

लाल कोठी
नगर वधू बन,
दाल मंडी
चतुर्भुज स्थान
जा बइठनीं
देह के बाजार

कबो मजबूरी वश
त कबो
बइठा देल गइनीं
छल से
त कबो बल से

सबला
देह सुख खातिर
अबला के हरण
हर युग में कइलस
इतिहास गवाह

आजु बाजारवाद में
देह व्यापार
बन गइल
कला-विज्ञापन के
आड़ में

www.bhojpurisahityangan.com

हमार देह के मांग
बेतहाशा
बढ़ रहल,
दाम
आकाश छू रहल

सबला चाम के
सिक्का चला
चानी-चानी
आ हम शिकार,
शिकारी कर रहल
मनमानी।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 5

बहुत दिन हो गइल
दिन का कहीं
कई बरिस हो गइल होखी
मन के आईना में झंकला,
झांके के मनो ना करे
अब

का झांकी?
अपने देहिया ना चिन्हाय
कइसे चिन्हाय?
सबला के दबाव में
अबला के भीतर
दबल ज्वालामुखी
फाटि चूर-चूर कर देले बा
आईना के

केतना छुपा के रखतीं
छुपावे के एगो सीमा होला
चूर भइल टुकड़न में
देहिया के अलग-अलग
रूप देखे के मिलेला
एही से ना देखल चाहींना
आपन देह के दुर्दशा

कबो गलती से
मन में झांक देनीं त
मने ना

www.bhojpurisahityangan.com

तनवो सिहर जाला
सिहरो काहे ना
एगो टुकड़ा में
आपन लोग घर में
दूसरा में
मलिकार बधार में
तीसरा मे
नौजवान बाजार में
चौथा में, पांचवा में
होटल भा बार में
आपन नंगा देह लउकेला

ई देखि
अपने देहिया घिनौना लागेला
आइनो घिनौना लागेला
अपने के ना पहचान पाईंना।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 6

कबो बिछावन
कबो ओढ़ना बनाके
कबो अंजरा, कबो पंजरा
अंकवार भरले रहलऽ
देह में अझुराइल रहलऽ
आ हमरो के
अझुरा के रखलऽ
अपने नसइलऽ
हमरो के नसलऽ

हमार देहिया के
का बुझेलऽ
आपन जागीर?
हमरा के
का बुझेलऽ
खिलौना?

तोहरा नजर में
हसीन
मेहरारू के देह
एगो मशीन,
बाकिर ना ऊ
मशीन ना हऽ
ओकरो भीतर तोहरे जस
एगो मन बा
ओकरो कुछ आपन
इच्छा बा

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर अपना देहिया के
भूख के आगे
ना सूझे
हमार देह के भूख,
साधन बनाके रखलऽ
हमार देह के,
संभोग से समाधि
के पथिक
ना बुझलऽ काम के माने
ना कामिनी के
आ ना समाधि के

आपन तने ना
लहुलुहान
मन देखि के
विदेह होखे के
मन करेला
तोहार करनी देखि,
बाकिर हमार उलाहना
कहां सुनेलऽ
सुनितऽ त
तुलसी दास हो जइतऽ

तोहार रचल ताना-बाना
सामाजिक संरचना
हमार देह के जरावे के जानेला
विदेह होखे ना देल चाहेला
एहू खातिर कतने ना
प्रपंच रचले बा

www.bhojpurisahityangan.com

अपना धर्म ग्रंथ में
तोहार समाज

भौंरा कब चाहेला
फूल से दूर रहल?
ई सवाल के जबाब में
तोहार चुप्पी
तोहार जबाब ह,
तोहार मौन कह रहल बा
कि तोहार मन
हमरा देह में
अझुराइल बा।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 7

प्रेम आ देह
के बीच फंसल
मेहरारू
ना उठ पावले
देह से ऊपर

ओकरा के
प्रेम, काम आ देह से
बाहर ना निकले देवे के
पीछे तोहार
साजिश के केंद्र में बा
हमार देह

देह आ प्रेम
पर बिचार करींना
तब देहे प्रमुख नजर आवेला
प्रेम गौण हो जाला
हमरा के देह के अलावा
एगो भोग्या से हटि के
देखलऽ कहां?

तोहर प्रेम के
देह के उपस्थिति से
अलग ना देखि पवनीं
काम संबंध के सच्चाई
जानल चहनीं

www.bhojpurisahityangan.com

त प्रेम में गहराई
ना लउकल
ओह में देह के
विस्तार देखे के मिलल

टुथ अंडर माई स्किन
के ना जान पइलऽ
ना जान पइलऽ
प्रेम के
बाकिर प्रेम आ देह के बीच
अपना कामातुर मन के फेर में
पैदा कर देलऽ
एगो मेहरारू के
तब त केहू सांचे नूं कहले बा
'स्त्री पैदा नहीं होती,
बनायी जाती है।'

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 8

प्रेम पुजारी
देह आ प्रेम
दू गो चीज ह,
तू हिंगरा के ना
देखलऽ दूनों के
आपन मन देखलऽ
हमार ना
आपन भूख देखलऽ
हमार सुख ना

मेहरारू देह ना
दिल होली सं
जिनिगी भर हमरा देह में
बाझल रहलऽ
हमरा दिल के कहाँ
समझलऽ

सांच कहीं
तोहरा ठीक ना लागी
काहे कि
सांच कड़वा नूं होला,
बाकिर सांच इहे ह
तोहरा छूवहूं ना आवे
हमार देह के

ई हम एह से कहत बानीं कि
तू आजु ले देह के छूअलऽ

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर ना छू पवलऽ
हमार स्त्रीत्व के
हमार मन के
हम आजुवो अधूरा बानीं
प्यासी बानीं
प्रेम के।

www.bhojpurisahityangan.com

देह -9

हमरा खातिर
देह महत्व ना रखे
अइसन बात नइखे,
नारी के देह से नेह
जग विदित बा

बाकिर तोहरा जस
देह के भूख में
ना भुलाइल रहींना
हम रात - दिन,
हमार स्त्रैत्व
हमार देहिया पर
भारी पड़ेला

हाड़-चाम के सुख में
फंसा के रखलऽ
आजु ले वैदेही के,
इहो इयाद ना रखलऽ
अनेक बेर
कबो हुलसी रूप में
त कबो नगर वधू बनि
तोहरा के
विदेह बनइनीं

आपन देह सुख ना देखनीं
बाकिर स्त्रीत्व सुख के

www.bhojpurisahityangan.com

ललसा रखनीं
जे कहां देलऽ
आजुले,
आजुवो हमार काया
ओकरे के खोज में
भटकत बा
तोहरा देस में
समाज में
अँकवार में

स्त्रीत्व सुख के खोज जारी बा
आ लड़ाई चली
जबले आधा आबादी
भारी ना पड़ जाई
अपना देह पर
तोहरा पर।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 10

देह के आधार पर
लैंगिकता भेद
आजुवो
हाय रे जमाना

देह के आधार पर
हमरा के फंसा रखलऽ
उपयोग आजुवो करत बाड़ऽ
बाजार में
राजनीति के मैदान में
अपना दीवाने खास मे
हाय रे जमाना

देह के आधार पर
का हो रहल बा सरकार में
मयखाना आ बार में
धरम के संसारे में ना
संउसे संसार में
देखिओ के मुंह चुप्पी
हाय रे जमाना

देह के आधार पर
तोहर जाति
काल्हु बधार में
बनवलस लाल कोठी
आजु बाजार में
दे रहल बा रोटी
बाकिर पहचान ना काल्हु देलस
ना आजु देवे के तइयार बा
हाय रे जमाना।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 11

हम तोहार स्त्रीत्व के
समझल चहनीं
तोहार देह के पढ़ि
दिल के ना
ई हमार गलती रहे

हम तोहरा के
प्रेम से सिंचल चहनी
देह के राहि
दिल के राहि ना
ई हमार गलती रहे

हम तोहरा के
सुख देल चहनीं
धन-दौलत दे
देहि के रउंद के
ई हमार गलती रहे

तोहरा देह से उठत
सुवास में
भुलाइल रहनीं
दिल के भाव-भाषा
ना पढ़ि पइनीं
ई हमार गलती रहे

त तूहीं बतावऽ
कइसे जनतीं
स्त्रीत्व के,

www.bhojpurisahityangan.com

ई जब जननीं कि
स्त्रीत्व के जाने-समझे खातिर
स्त्री बने के पड़ेला
ओकरा मन के
पढ़े के पड़ेला
त हमरो मन चहलस
स्त्री काया में बसल

बाकिर ई का
तब हमरा भीतर के मरद
बोल उठल
भाग मरदे अब
इहे कइल बाकिर
रह गइल बा
मरद के नाम हँसइबे का?

इहे करे के रहे त
काहे खातिर मरद के चोला
भगवान से मंगले रहऽ
मुंह पर करिखा पोत लऽ
बाकिर ई कलंक मति लऽ
अपना माथे
आपन जनि सोंचऽ
मरद जाति के सोंचऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 12

कन्या दान
बाबूजी कइले
हमहूं कइनीं
देह दान
मान ना मिलल
पहचान ना मिलल
तब कइसे करीं बखान
एह देह के
जेकरा में नइखे जुबान
बाबा के बबुनी
ससुर जी के बहुरिया
नाम से ना जानल गइलीं
आजुले
नाम पहचान देला

पढ़ली-लिखली
कि पहचान मिली
साथे जुबान मिली
आपन आकाश मिली,
बाकिर ना ऊ मिलल
जेकर चाह रहे,
बन के रह गइनीं
देहे भर,
हमरे कोख आ देहि के भार से
दबा के रखलऽ
हमरा के
हमार देहो दान
काम ना आइल।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 13

देह से अलग हटि
पहचान बनावल
एगो मेहरारू के
कठिन आ चुनौतीपूर्ण
जरूर बा
बाकिर असंभव ना
काहे कि
चुनौती के सामना कइल त
ओकरा जिनिगी
आ स्वभाव के हिस्सा ह

ओहि पहचान बनावे खातिर
अपना जिनिगी में
नया-नया आयाम देले
आ ओकर नया काम
ओकरा के संतुष्टि देला
हताश ना होखे जल्दी
लागल रहले
ई सोंच कि
देर भले लागे
काल्हु पहचान मिली
देह से अलगो
ओकर दुनिया बा
ई ऊ भीतर ले
महसूस करी

www.bhojpurisahityangan.com

ओकरो देहि के भीतर
पसरल रेगिस्तान में
जन्मल नागफनी
जर ओरा जाई
आ मन महकी
मन गाई
मन नाची
जइसे बसंत आवते
कोयल कुके ले
मोर नाचेला,

ओकरो जिनिगी में
बसंत आई
मन हरियराई
फूलो खिली,
ई बिसवास बा
ओकर त्याग, बलिदान
अकारथ ना जाई।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 14

देह इजाजत ना देवे
मन दुत्कारेला
मन के रेगिस्तान में
उगल नागफनी
कहेला
कवना आस में बाड़ू
केकरा से आस लगवले बाड़ू

बाकिर ई सुनियो के
देखियो, भोग के
हम तोहार साथ ना छोड़नी
तोहार घर के
आबाद करे खातिर
तन-मन निछावर कर देनीं
भले तू ना समझलऽ
हमार देह के देह
मन के मन

एकर कारण दू गो रहे
एक कि एगो घर हमरो मिल जाई
जेकरा के हम आपन कह सकब
दूसरा कि तू आ तोहार प्रेम पर
हमार एकाधिकार हो जाई,
हमरा का मिलल?
ई हम का बोलीं
तू बोलऽ
चुप काहे बाड़ऽ,

www.bhojpurisahityangan.com

ना बोलबऽ
त सुनऽ
हमनीं बीच श मैं श जिंदा
रह गइल
हमार 'मैं' के तू 'हम' ना
बने देलऽ
आपन पौरुष बल के
हमरा स्त्रीत्व से
मेल करावल
हेठी के बात बुझाइल।
तोहरा

तोहरा डर रहे
समाज तोहरा के
मउगा कही।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 15

आँखिन से उतरलऽ
हृदय में
प्रेम बनि के
उलझि के रह गइलऽ
हमार देह में

देह में खोजल चहलऽ
हमरा के
देह दर्पण ना होखे
मन के,
आंखि दर्पण होला
मन के
अँखिया में झंकितऽ त
लउकित कि
एगो नारी के मन
का कहत बा?
का चाहत बा?

बाकिर काम योगी
तू अंखियन में
हमरा खोजेलऽ
काम के भूख
अपना देहि के सुख खातिर,
जदी ऊ ना लउके त
तोहार हवस
पिछा ना छोड़े हमार
काहे कि

www.bhojpurisahityangan.com

तोहार सोच ह कि
नारी हृदय में खुद
कामना ना जागे त
जगावल जाला
जबरदस्ती,
घोड़ा जस स्त्री के वश में
करे आवेला मरद के
आ ओही में तू आपन
मर्दानगी समझेलऽ
आ हमरो खुशी देखेलऽ
ओह में
समर्पण के अर्थ
तोहरा शब्दकोश में नइखे

बिना मन के देहिया के
नोंचलका के
पीड़ा देहिया से अधिका
मन के दुख पहुंचावेला
तोहार सुख में
हमार दुख छिपल रहेला
उहे दुखवा छलनी
कर देले बा
हमार सीना के

ओह सीना के
जेह में रखले रहीं
देवता बना के
पूजा कइले रहीं
तोहरा के

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर अपने हाथे
उजाड़ देलऽ
आपन ओह मंदिर के
देह सुख खातिर।

www.bhojpurisahityangan.com

देह -16

राति भर के मइसाइल
देह टूटत बा
मन अलसाइल
बाकिर उठे के बा
होत फजिरे,
मुन्ना के स्कूल के भेजी?
साहेब के टिफिन
के बनाई?

बेमन के बिधुनाइल देह
इजाजत ना देत रहे
उठे के
बाकिर अलार्म
ना सुते देत रहे,

बुझात रहे कि
केहू कान में कहता
कि तू विदेह हऊ
उठऽ
देहिया कहिया तोहरा
कहला में रहल बा
कि आज ओकर सुनत बाड़ू

उठऽ ... उठऽ ... उठऽ
जागऽ ना सुनि के
बिछावन छोड़ देनीं
तब तंद्रा टूटल,

www.bhojpurisahityangan.com

मन कहलह कि
उठऽलू त तू रोज
जागऽलू कहाँ
जगतू तऽ देह ना रहतू

वैदेही
अबहूं तू जागऽ
तू खाली देह बनिके
कबले रहबू?
हमरा भीतर के स्त्री के
आवाज कहत रहे
हमरा से।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 17

हमार मन के
मन ना समझलऽ
आजुले तू
आ हमरा देह त
तोहार जागीरे ह

बिना मन के
तोहार छुअलका
कांट जस लागेला
देहिया के,
लागेला जइसे
साँप रेंगत बा
देहिया पर

ओह साँप जस
जे आपन जहर
उगले खातिर
जीभ लपलपा रहल बा,
अइसना में
तोहार देह के
भूख मिटावल के
तू भले मिलन समझऽ
हमार मन
ओकरा के
बलात्कार समझेला

www.bhojpurisahityangan.com

स्त्री के देह के
भूगोल में भुलाइल
मरद
तनिका इतिहासों
उलटि के देखऽ,
समझऽ
स्त्री खाली देह ना होले
एह खातिर
हमार मनो के पढ़ऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 18

हमरा तोहरा बीच
ना जाने कई बेर
समझौता पत्र के
मसौदा तइयार भइल
बाकिर आजुले
ना रूप लेलस
घोषणा-पत्र के

मौखिक समझौता
आ तोहार आश्वाशन
ओसहीं टूट जाला
जइसे
तोहर देहिया के पावे खातिर
अगहन में नथिया गढ़ावे
चूनरी खरीदे के वादा

किसान के जिनिगी में
अगहन के आस
आ नारी जीवन में
मरद पे विश्वास
कहाँ भेंटाला

खेते जस नारी देह
कोड़ात रहेला
भूख मिटावे खातिर
सुख पावे खातिर

www.bhojpurisahityangan.com

पियास बुझावे खातिर
बाकिर किसान के जिनगी
खेत के डड़ेर पर
आ मरद के
नारी देह के डड़ेर पर
सुख, भूख के फेर में
चलल ना छोड़े
मउवत के घरी ले।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 19

हमार सहमति के
जरूरत
ना समझलऽ
अपना काम के भूख
के आगे

बाकिर ई जान लऽ
सहमति से दैहिक संबंध
उर्जा देला
ऊ आनंद देला
ओहि संबंध के
ब्रम्हानंद कहल गइल बा

बिना मन के बनल
संबंध त
बलात्कारे नूं ह
आ जदी तोहरा नजर में
बलात्कार नाहियो होखे
तबो आनंद आ उर्जा के
स्रोत त नाहिये ह

तोहर जाति
दैहिक संबंध के
आनंदोत्सव के रूप
ना जाने
ओकरा खातिर
ऊ रोजमर्रा के
रोटी - दाल।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 20

सुनीं मालिक
अब छोड़ीं
देह से नेह

देह मिलल बा
भोगे खातिर ना
विदेह होखे खातिर

भोग रोग देला
कामो
मनोरोग ह
कबले नासब हमरा के
आ खुदो नसाईब

हमार मन कहेला
अब ले नसइनीं
अब ना नसइबो
बाकिर राउर
देह रामायण के
दैनिक पाठ
छूटे तब त

हे देवता!
जागीं
देहिया मिलल बा

www.bhojpurisahityangan.com

विदेह बने खातिर
तेयागी
काम पिपासा

आई गाई जा
देह के मर्सिया
मिल के
मदनोत्सव के भूलि,
आ रखीं जा पैर
आनंद अँगना
मनाईं जा
आनंदोत्सव।

www.bhojpurisahityangan.com

देह - 21

1–

तोहरा आँगन में
आइल रही
देह लेके
साथे कुछ सपना

देह जिंदा बा
अबहीं
सांस चल रहल बा
सपना मर गइल।

2–

ढेर दिन गवइनीं
देह के
संवार सजाई परोसे में
तोहरा आगा

बाकिर तूं
शरारत से बाज ना अइलऽ
अब थाकि गइनीं
पीठ अब दुखात बा
अपने देहिया के भार
ढोवत-ढोवत।

www.bhojpurisahityangan.com

3–

मोहक शब्द जाल
गहना – गुरिया
लाल – धानी चूनर
आगे खूब फेंकलऽ
देहिया के पावे खातिर

तोहार प्रेम में लुभा
दाना के चक्कर में
तोहार बुनल जाल में
फंसि गइनीं
तोता जस
मासूम लइका जस

का कहीं बुझात नइखे
एकरा के
तोहार छल
कि हमार सपना के लूटेरा।

4–

हमार देह
एगो उत्तर ह
तोहार सब सवालन के
जे तोहरा मन में
सदियन से
घुमड़त रहे

www.bhojpurisahityangan.com

आ उत्तर पुस्तिका
हमार जिनिगी।

5–

कुछ नइखे भइल
कुछ नइखे भइल
खूब भइल
ढेर दिन ले

अब बदल गइल बा
जीवन के
राग-रंग

तबो नइखे छुटत
तोहार
देह राग।

6–

हमार देह के
दुख के अंत नइखे
एगो राहि बा
एकर अंत के
देह के अंत

हम जानत बानीं
तू ओकरा के
मृत्यु कहे लऽ,

www.bhojpurisahityangan.com

बाकिर हम अपना के
रूह में ना बदलब
ऊ हमार हार होखी

हम देह रहत
आपन पहचान चाहत बानीं
वैदेही होखल चाहत बानीं।

7–

हमार पीड़ा
हमार मनोदशा
तू ना समझ पइबऽ

कहल आसान बा
कि समय बदलल
बाकिर दुखद ई बा
कि हमार आवाज
देह के पुकार
तोहर समाज
आजुवो
अनसुना करत बा

तोहार आँखि पर चढ़ल
चसमा
देह देखेला
ओकर पीड़ा ना।

www.bhojpurisahityangan.com

8 –

हमरा देह के
खाली अन्हार से
डर ना लागे
चकाचौंध रोशनियों से
डर लागेला

बाजार के चकाचौंध
रोशनी
हमार देह के
दाम लगावेला
चाम के रंग देख।

9–

देह बिला गइल
पहचान
ना मिलल

मरद मेहरारू
के भेद
ना मिटल

आधा आबादी
नाम पड़ल,
बुझा ना
सांचहूं अधूरा बा
जिनिगी
ओजुवो ले।

www.bhojpurisahityangan.com

10 –

अपने देह से
गुफ्तगू
आज ढेर दिन बाद

देह के फुर्सत
ना मिले
ना एकांत
कि दूगो बात
दिल के कहीं सुनीं

देह चुप रहे के
इशारा करत
कहलस
चुप ना रहबू
दरद से बोली निकलत बा

देह आजु ले
चुप....।

11 –

धन के देखि
बियाह दिहलऽ
धान के मुलुक
ना सोचलऽ
आँखि के पुतरिया के
देह के दुख
आ दशा के बारे में

www.bhojpurisahityangan.com

तोहर धिया
ना देखली बसंते
ना जनली सासुर सुख

धान के देस
धिया के देह
धान आ धनवान जोरे
उसिनात रहल
दिन-रात।

12 –

अपने देहिया
भार हो गइल बा
हमार

देह ढोवत - ढोवत
कमर झुक गइल
कान्हि जबाब दे देलस
पीठ कहत बा
अब ना

तबो मुँह चुप बा
बुझात बा
ई चुप्पी
तूफान के पहिले के
खामोशी ह
सावधान!

www.bhojpurisahityangan.com

13 –

भीड़ भाड़ में
खोजींना
कवनो परिचित चेहरा के
जे पहचानत होखे
हमरा के
हमार देह से हटि के

ना केहू ना मिलल
जे पहचानत होखे
हमरा भीतर के
मेहरारू के

देहिया से नजर
हटे तब त
पहचाने हमरा के।

14 –

विडंबने त कहाई
जे मिलेला
ओकर नजर
देह के देखेला

उहो अइसन नजर से
जइसे मेहरारू ना
कवनो अजायबघर होखे

www.bhojpurisahityangan.com

जइसे आजु ले
ना देखले होखे
मेहरारू के

नारी के देहो से अलग
अस्तित्व बा
मन देखावल ना जा सके
मन के पढ़े के पड़ेला

देह से हटि के
मन के पढ़ीं
देह से अधिका सुकून दी
मन के निकटता।

15 –

दुनिया भाग रहल बा
घर भाग रहल बा
ओह भगावे में
गति देवे में
हमहूं बानीं

तू मानऽ
भा जनि मानऽ
बाकिर एक बार
घूम के देखबऽ
त दिखाई पड़ी

तोहरा के भगावे में

www.bhojpurisahityangan.com

हम थाकि के बइठ
गइल बानीं
अपने देह के भीतर

चेहरा पर हँसी जे देखलऽ
ऊ हँसी मुखौटा ह
आपन दुख के
अपने ले राखे खातिर
तोहरा के खुशी
देवे खातिर।

16 –

तोहार देह के भूख
आन्हर बा
जे दरिंदगी पर
उतर जाला
औरत के देख

ना सुने अबला के पुकार
बच्चियन के चित्कार
शर्मशार कर जाला
मानवता के

कामान्ध
जवना देह से
पैदा भइलऽ
ओकरे नंगा करे

www.bhojpurisahityangan.com

नोचे में
आपन शेखी बुझेलऽ

छी मानुष छी
कुछ त शर्म करऽ।

17 –

देह ना आपन रहल
बिका गइल
ओही दिन
जेह दिन
बिछिया, मंगलसूत्र
पहिन लेलस

सौदागर तूं
सौदा हमार देह
मनमानी उपयोग
स्नेह के दुरुपयोग

एगो मेहरारू
घरवाली
के चाह
देह से हटि के
तनिका सा
मन के सुकून।

www.bhojpurisahityangan.com

18 –

देहिया के
खूब संभाल के रखनीं
बचा के रखनीं
गलत निगाह से
गिधवन से

तबो तोहार समाज में
गिर गइल
हमार चरित्र
ना जाने का का
नाम देलऽ

टुकड़ा में बंटल हम
मुक्कमल स्त्री के
खोज अपना भीतर
जियल चहनीं
जे ना देखल गइल
तोहरा से

काल्हु अधूरा रहीं
आजुवो अधूरा बानीं
बाकिर काल्हु ना रहब
ए हमार देह के
मलिकार।

www.bhojpurisahityangan.com

19 –

देह के आकाश में
खूब बिचरलऽ
तबहूं ना बुझलऽ
प्रेम के बारिश बिना
ना निकलेला
इन्द्रधनुष
देह के आकाश में

देह खोजेला नेह
प्रेम मिलते
मन में बिखर जाला
इन्दधनुषी
सतरंगी छटा
भुला जाईंला
सब तोहार देल दर्द

हो जाईंला
तोहार
खाली तोहरे।

20 –

मन पुछेला
अपना आप से
काहे पड़ गइलू आसक्ति में
मरद के?

www.bhojpurisahityangan.com

काहे सांच मान लेलूं
ओकरा प्यार के?

देह प्रेम के झांसा
में फंसलू
अब पछतावा काहे?
दोष खाली
ओकरे काहे?

का कहीं
भुला गइल हमार
बुद्धि आ चेतना
प्यार पाके
ना रह पवनीं
कमल बनि
किचड़ में।

21 –

ना तू देह
ना हम देह
ना तोहार देह रही
ना हमरे

जरि जाए के बा
एक दिन देह के
बदल जाए के बा
एक मुट्ठी राख में

www.bhojpurisahityangan.com

ई जानतो
काहे खातिर
तू बनावे लऽ संबंध!

देह के भूख मरबऽ
तब जाके जागी
आत्म ज्योति।

22 –

अमृत के गठरी रहे
देह भीतरे
बाकिर दैविक सुख
के जगहा
दैहिक सुख
के चक्कर में

झुक गइल कमर
देह मुरझा गइल
सांसारिक ओहार से
अमृत कलश
ढका गइल

देहिया भार हो गइल
अहम सब खा गइल।

www.bhojpurisahityangan.com

23 –

मातल देह के
मदनोत्सव
जब बदल गइल
आनंदोत्सव में

मन के बगइचा में
देखनीं बइठल
तोहरा-अपना के
शिव-पार्वती जस

प्रेम के अमृत सरोवर में
डुबल पवनी अपना के
तोहरा के अपना से
अलगा ना देखनीं

एकाकार स्वरूप
चहुंओर आनंद
ना रह गइल
कुछ दूसर पावे के
अब मरियो जाईं
त कवनो गम नइखे।

24 –

विधाता देले
हमरा के

www.bhojpurisahityangan.com

ई देह
तिरिया जनम

आ हम
जिनिगी भर
ढोवत रहनीं
अपने पीठ पर
आपन भार

आ तू
लिखत रहलऽ
कविता, कहानी
हमरा के नायिका बना

कागज के जगह
हमरा के
जिनिगी में नायिका
बनइतऽ त
आज हम आपन पहचान
ना खोजतीं
तोहरा समाज में

हमरो जिनिगी में
धुंध-कोहरा
छंट जाइत

पहचान
हमरो मिल जाइत।

www.bhojpurisahityangan.com

25 –

कवन गुनाह?
कइसन गुनाह?
विधाता कि
जनम पवनीं
तिरिया रूप में

देह देह में
अइसन भेद
काहे?
कि प्रार्थना करे के
पड़त बा
कहे के परत बा
कि तिरिया जनम जनि
दिहऽ हो विधाता।

26 –

ना केहू आँसू पोंछलस
ना देखलस दाग
एह देह के

जनि छूवऽ मन के
ना जाने केतना
छिपल बा
दर्द के सैलाब

www.bhojpurisahityangan.com

स्त्री के देह
कर रहल बा चित्कार
हे सरकार!
खाट से अलगे
हमरो बा संसार।

www.bhojpurisahityangan.com

हमार हिस्सा

तोहरा मालूम बा नूं
हमनीं के मेहरारू
पीठो से
देख सुन लींना जा
मरद के मन
का खोजत बा
ओकर आँखिने से ना
ओकर चमड़ों से
हाव-भाव से
जानि जाईंला जा

'शीश उतारे भुई धरे
तब पैठे घर मांहि।'
एकरा शरण गइला से
भगवानो मिल जालन
अपनो पहचान मिल जाला
बाकिर हम इहे कइनीं
तोहरा घर में घुस के
भगवान तोहरे के मनलीं
बाकिर ना भगवान हमार भइलन
ना हमरा पहचान मिलल

तोहार चौखट, आँगन, चारदीवारी
हमरा के हमरा आकाश से दूर रखलस
बाकिर हम तोहार चाल से
वाकिफ हो गइनीं
तोहरा के पढ़ि - समझ के,

www.bhojpurisahityangan.com

तूहूं समझल होखबऽ
हमरो के
हमार मन के इच्छों के,
बाकिर मन के त छोड़ऽ
ना बूझलऽ आजु ले
देहो के चाह,
भूख, नींद, मैथुन
प्राकृतिक आवेग ह
ओकरो के कुचुल दिहलऽ
आपन मरदई जनावें में

समय बदलेला
समय कह रहल बा हमरो से
आपन पहचान ले
आपन आकाश ले
अपना हिस्सा के धूप ले
अपनो जिनिगी के ऊष्मा दे
अब ना मानब
गते घुसका दीं हमार हिस्सा
हमरा देने
मानसिकता बदलीं
समय बदलल।

www.bhojpurisahityangan.com

मरद के अंकगणित

कैंसर से
कम पीड़ादाई ना होला
मरद के देल पीड़ा

कैंसर
अब लाइलाज ना रहल
बाकिर उनुकर देल
पीड़ा लाइलाज बा

एह बीमारी के कारण
सेनूर ना हऽ
कारण हऽ पुरुष मानसिकता
जे हमरा पीड़ा में
सुकून खोजेला

सुहागरात से शुरू
दरद के जतरा
मौत के बाद
सजल चिता ले
साथे चलेला

साड़ी में
बाड़ी में
घर में
चुहानी में

www.bhojpurisahityangan.com

दरद आपन घर बना
बइठल बा
जनानी में
जूनूनी मरद
बाहर भले डेग-डेग पर हारेला
घर में ना हारल चाहेला
मेहरी से
मरद के इज्जत
हईं जा
ओहि इज्जते खातिर
चौखट, आँगन बनावल गइल बा
लाल कोठी बनावल गइल बा
ढेर ऊँच
जेकरा में छिपल दरद
बाहर ना दिखाई देवे
उठत कराह
कोठिये में दब के रहि जाला

मरद-मेहरारू के केमेस्ट्री में
प्रेम के इकतरफा
रिसोर्स पर्सन मरद होला
मेहरारू रिसोर्स
आ मरद के अंकगणित में
मेहरारू के दरद के पहाड़ा
होम टास्क होला
जेकर अंत जिनिगी के साथ होला

www.bhojpurisahityangan.com

कैलाश मनहर कहले
मेहरारू एगो खुलल किताब
जेकरा के पढ़ला से जरूरी बा
जानल ओकर रहस्यमयी दरद के
ई तबे संभव बा
जब मरद के भीतर
पैदा होखी बइठ जाई
एगो मेहरारू।

www.bhojpurisahityangan.com

नारी

आजु के नारी
कहाँ उबरली स आजुले
झूठ मर्यादा आ पितृसत्ता
के चक्रव्यूह से

आजु के नारी
कहाँ दे पवली स आजुले
आपन भावना के
आपन इच्छा के
फरे-फूले खातिर खुला आकाश

आजु के नारी
काहे ढो रहल बाड़ी स आजुले
थोपल पुरुषवादी सोच के
जे ना देखल चाहेला स्त्री के स्वतंत्रता
ना चाहे मेहरारू के
ओकरा इच्छानुसार जीए देवे के

आजु के नारी
काहे पहचानल जात बिया
लैंगिकता के आधार पर
काहे पुरुष नइखे निकल पावत
ओकरा देह से बाहर
कारण कुछ अउर ना
ओकरा देह में योनि बा

www.bhojpurisahityangan.com

आजु के नारी
काहे मौन धइले बिया सब सममझियो के?
काहे कठपुतरी बनि नाच रहल बिया?
परिवार, समाज आ बाजार बीच
ऊ समझत बिया
पुरुष प्रधान समाज के खेल
बढ़िया से तबो।

www.bhojpurisahityangan.com

मौन - 1

हम चुपे रहब
रउवे बोलीं
ई अधिकार परम्परा से
रउवे के बा,
बा का रउवा रखले बानीं
अपने भीरी
हमार मौन के मौन जनि समझीं
मौनो बतियावला
कुछ नाहियो बोल के
बहुत कुछ बोल जाला
तब तऽ हमार मौन
रउवा से ना सहल जाला
कई बेर
अइसन होला
हमरा मौन के अर्थ
बोललको से भारी हो जाला
रउवा मन में डर समा जाला
ई सोच कि कहीं ई
तुफान के पहिले के
सन्नाटा त ना हऽ ?

बाकिर बुझियो के रउवा नइखीं बुझत
हमरा मौन के
हमार मन के
तऽ अब सुनीं
हमहूं चुप ना रहब, बोलब
हमहूं मुँह खोलब
बहुत दिन ले रउवा डोलवनीं
अब ना डोलब।

www.bhojpurisahityangan.com

मौन - 2

मौन में
शक्ति होला
आनंद छुपल रहेला
जब मौन ऐच्छिक होला

हमार मौन
ऐच्छिक ना हऽ
थोपल हऽ तोहार
आ तोहरा समाज के

जबरन छिनले बाड़ऽ
हमरा से हमार
बोले के आजादी
मजबूर कइले बाड़ऽ
हमरा के चुप रहे के
हमरा भीतर जनमल खामोसी
तोहर दमन के कहानी
छुपा रखले बा अपना भीतर

अब जनि खोरऽ
भीतर छुपलका आगि
भभक उठी
जारि दी तोहार
झूठ से सजल इज्जत के चादर
अनीति के कवच
जे ओढ़ा रखले बाड़ऽ
आजु ले हमरा ऊपर से।

www.bhojpurisahityangan.com

कारावास

घर के चारदीवारी में
बन्द
मेहरारूअन के गोड़ में
जंजीर ना होला
हाथों में ना होला
बेड़ी
बाकिर मुट्ठी भर
अपना हिस्सा के
आकाश खातिर
तरसेली सं दिन-रात
रंगोमहल, बड़का कोठी
लागेला
उन्हिन के कारावास।

उन्हिन के सांस
बइठल पहरेदार
उन्हिन के आँख
करेला खबरदार
थाकल बदन
मन बीमार
जेलर के फरमान
भुला जनि औकात
घर के कोना-कोना
लागेला
उन्हिन के कारावास।

www.bhojpurisahityangan.com

चौखट लागल दरवाजा
घर के खिड़की बन्द
मन चाहे देखल बसंत
खेतन आ बगिया के,
बागवान कहनाम
घरे ह मंदिर
हम भगवान
पूजऽ हमरा के
सब विधि विधान,
दरद से भरल मन
दरद से भरल तन
गुमसुम बन्द जीवन
लागेला
उन्हिन के कारावास।

www.bhojpurisahityangan.com

कोख

कोख हमार
मालिक तू
ई का हऽ,
आज ले ना बुझलऽ
अब का बुझबऽ
मरद नू हवऽ।

हमार कोख
हमरा के माई बनावेला
हमरा के पूर्णता प्रदान करेला
बाकिर ओहू पर हमार अधिकार कहाँ बा
तू इच्छा थोपेलऽ
जे हम ढ़ोईना,
हमरा के बाजार के वस्तु बनवलऽ
चुप रहनी
आज हमार कोख बाजार में आ गइल
सौदा हो रहल बा कोख के
पिता बने के इच्छा जे पूरा करे के बा तोहार
समाज त तोहार हऽ
हमार इच्छा के कवन मोल।

कोख हमार
बाकिर मरजी तोहार
भुलियो के आपन मरजी चलाईं
त तूही ना
भीतर से तोहार अस्तित्व डोल जाला
ओकरा के अनैतिक करार देल जाला

www.bhojpurisahityangan.com

औरत नू हईं
हमार देहो हमार ना तोहार ह
ई तोहार अकेले के निर्णय ना ह
पुरूष प्रधान समाज के ह
जवना चीज पर पहिला अधिकार हमार बा
उहो पर हमार कहाँ तोहरे अधिकार बा।

सांच त इहे नू ह
नौ महीना तक देह हम भारी राखिला
अपने शरीर अपने पर भारी हो जाला
नव महीना बाद हमरा पेट पर नश्तर चलेला
मौत के नजदीक से हम देखींला
अउर पिता रउवा बनेनीं
वंश वृद्धि राउर होला
हम छोड़ देल जानी आगे के तैयारी खातिर
ई का ह?

इहो सांच ह
हम त अपना मरजी से माइयो ना बन सकीं
आ तू अपना मरजी के थोपत
जब चाह गर्भवती बना दऽ
तबतक जबतक
पुरान आटा के बोरी जस
कोख झुलके बेडौल आ कमजोर ना हो जाय
हम आधी आबादी जरूर कहानीं
कहे भर के
पर नइखीं रोक पावत ई जुल्म
समाज आजो तोहार हऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

इहो सांच ह
असल में ई सब खेल
कोखे से जुड़ल बा,
एगो कोख से बाहर ना आवे
तबतक दुसरा के तैयारी शुरू
हाय रे कोख!
पिता बने के सुख चाही त तूं
हमरो के सिखावे के होई त तूं
सांच त इहो ह कि
बालात्कार के धमकियो
मरद तोहरे चलते दे पावेला।

का का बताईं
केकरा के सुनाईं
ऊ सुने ना
मरद हऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

सोना के पिंजरा

मारल रहे मति ए सखिया
बाबा केर दुअरिया
माई चाची कहली तू बेटी
आन घर के छेरिया

ना रोई पवनीं नइहरवा
नाही रे ससुरवा
नाही कहि पावेली नारी
मन केर पीड़वा
मिलल सिखवा इहे कि
खोलिहऽ जनि मुंहवा
पिहऽ तू दरदिया भीतरे
इहे तोर नियतिया

नियति लिखले हो दइबा
कारिख केर कलमिया
देहिया के संगे ऊ दिहले
कोखि के उपहरवा
कोख भले हउवे तोहार
मरद के संपत्तिया
कुल दीपकवा खातिर
होला सब दुर्गतिया

कोखिये कारण ए बेटी
हत्या कइलू जतिया
देखे ना दिहलू बेटी के
सुरुज के किरिनिया

www.bhojpurisahityangan.com

मरद के कहले प चललू
छोड़ि आपन मतिया
अब तूहूं जागऽ बिटिया
फूंकऽ तू रणभेरिया

गोड़ तूहूं रखलू ए बेटी
जब घर के बहरिया
बांचल कवनो जगह ना
सगरी बोले तूतिया
अतनो पे मरद जतिया
सूझे ना किरितिया
फांसे ला दिहलस बनाई
सोना के पिंजरवा

सोना के पिंजरवा बनाई
डललस सुख के दनवा
मत तू लुभइहऽ दाना पर
लोभी ऊ देह दिवनवा
पांखि काट डालि दी तोहे
सोने के पिंजरवा
उड़ि तूहूं चलिहऽ ए बेटी
तूड़ी के रे पिंजरवा।

www.bhojpurisahityangan.com

विदाई

का छोड़ीं नइहर, का लेके जाईं
अपने जन्मलका के करे ल विदाई
दरदिया कहलो ना जाए

बिटिया के जाति हम जन्मे से बोझ
भउजी के कहीं का, माइयो ना देखे सोझ
फुआ, आजी के कवनो आंखि ना सोहाई
हमरा के नून भात, भाई तोहरा के मलाई
दूरंगिया सहलो ना जाए

दिहल विदाई खोंइछा दुबि, हरदी, जीरा
छोड़त घर फाटे हिया जइसे फाटे खीरा
बनिहऽ कठोर धिया हरदी के गांठि कहे
बंजरो में जइहऽ हरियाई बेटी दुबि कहे
चलनिया हमें ना सुहाए

नाही सुख नईहर, न ससुरे में सुख मिलल
नाही हँसे नइहर, ना ससुरे रोये के मिलल
लाल कोठी भीतरे अकास बंद मोर बाबू
सिसिकत जिनिगी अन्हार घर बाटे बाबू
जिनिगिया तनी ना सुहाए

कवने कसूर दइब ई चलन तू बनवलऽ
तिरिया जन्म देके घर से विदा करवलऽ
नारी ना नइहर के ना ससुरा तोहार घर
नाही तोर जिनिगी में भेंटेला कबो सहर
अन्हरिया हमें ना सुहाए।

www.bhojpurisahityangan.com

देह राग

तनी सुने ना हमार, तनी सुने ना हमार
ए सखी मोर घरवाला

काम में भुलाइल रहे, चमवे में सुख खोजे
अपना के बुझे रंगबाज
देह चाटे दिन-राति, देह के सरगि बुझे
अपना के बुझे कामराज
ए सखी मोर घरवाला

गावे गीत देहिया के, नाही सुने एक मोर
रति सुख खोजेला आनंद
उड़ता जवानी आज, छोड़ि के ऊ सब काज
पाई कइसे ऊ ब्रम्हानंद
ए सखी मोर घरवाला

देहिया के राग भावे, जगत के गीत गावे
कइसे जगाईं हरि राग
नाही भावे राम नाम, नाही सत्संग भावे
गावे हर घरी देह राग
ए सखी मोर घरवाला।

www.bhojpurisahityangan.com

पंखिया जनि काटऽ

नाही चाहीं धनवा, ना चाहीं दवलतिया
उड़े के चाहीं हमके खुला असमनवा
बाबा तोहसे अतने विनीतिया, पंखिया जनि काटऽ।

जाइब कवलेजवा, पढ़ब हम इंग्लिश
बान्ह जनि गोड़वा में अब तूहूं बेड़िया
खेतवा से सीमा प ले हमरो के देखब
ऊँचे तोहार राखब पगड़ी के मनिया
पापा तुड़े द पिंजरवा के जाल, पंखिया जनि काटऽ।

अंगुरी पकड़ी हमके कबले चलइबू
अँचरा के छहिया में कबले लुकइबू
पांखि नोंची गीधवन के, मुड़िया मरोरब
बनि दुर्गा दुसमन के, जारिब खोरब
माई रे पूरा करिब तोर अरमनिया, पंखिया जनि काटऽ।

अब ना बेचाई खेत दहेजवा के खातिर
हम ना बनबि कठपुतरी मरदन के खातिर
अब ना बिकाई भौजी गहना गुरिया
खुली ना अब खुँटवा से तोर धेनु गइया
भइया हो पूरे द हमरो अरमनिया, पंखिया जनि काटऽ।

मरद के जाति सुनऽ, आँट में तूं आव
मिलजुली सब अब काम सलिटाव
बूझऽ नाही हमरा के अब तू अनेरिया
नाही हम हईं देख छेरिया बकरिया
राजा हो हमरे से तोर परधनिया, पंखिया जनि काटऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

हमहूं आजाद हईं, भारत के नारी
हमके आजादी चाहीं, छोड़ीं लुगा साड़ी
बरजल सुनीं ना त, गरजलो हम जानीं
जाग गइनीं हमहूं अब रहब ना चुहानी
मरदे सुनऽ छोड़ऽ गरभ गुमनिया, पंखिया जनि काटऽ।
सामने खुला बाटे मोर असमनवा, पंखिया जनि काटऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

मरदा अबहूं तू समझऽ

अरे चल सखी करे तू गोहर
मरदा अबहूं ना समझे

घरे के बाति छोड़ऽ, बहरो ना बुझेला
छोड़े ना आपन चाल हो
अबले नचवलस ऊ,अब हम ना नाचब
करि देबि उन्हुका बेहाल हो
अरे गरदा उड़ा के परदा के फरनी
शिक्षा आ समय के कमाल
मरदा...

सरपंच हमहीं, प्रधान बनि बइठल
कोट कचहरिया हमार हो
देसवा विदेसवा में हमरे से रौनक
सीमो पर बानीं सवार हो
अँखिया प तबहूं मरद के चसमवा
खाली देखे देहिया उघार
मरदा...

घरवा के खरची, हमरे से आजु चले
हम उड़ीं आजु असमान हो
बाबू-माई सेवा हमहूं धर्म समझीं
कान्हे लेके जाईं असमसान हो
डेगवा से डेग मिलाई चलीं तोहरा
तबहूं नाजायज फरमान
मरदा...

www.bhojpurisahityangan.com

डंका के चोट पर,सुनऽ अब एलनवा
जनि होखऽ ढ़ेर परेसान हो
पिंजरा तोड़ि,खुलि के अकासे उड़ब
चाहीं अब हमरो जहान हो
गहना गुरियवा से ढ़ेर दिन ठगलऽ
अब चाहीं हमें पहचान
मरदा अबहूं त समझऽ।

www.bhojpurisahityangan.com

कनक किशोर

कविपरिचय

पिता - स्वर्गीय चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

साहित्यिक अवदान -

भोजपुरी - हरियरी रोपत हथेली (काव्य संग्रह), ठाकुर जी के मठिया (कहानी संग्रह), गाँव गावे गीत (काव्य संग्रह), कठपुतरी (अनुदित काव्य संग्रह), अन्हरिया - अँजोरिया (काव्य संग्रह), धधकत सुरुज, पियासल धरती (काव्य संग्रह) रंग-विरंग-कथेतर (गद्य संकलन) रंग-विरंग -2 (कथेतर गद्य संग्रह), रंग-विरंग -3 (कथेतर गद्य संग्रह)

हिन्दी - जिंदगी धुआँ-धुआँ (काव्य संग्रह), छिपी मुस्कानों की दर्द (काव्य संग्रह), हरित उलगुलान (काव्य संग्रह), भाप बन उठती जीवन के गंध (काव्य संग्रह)

संपादन - जोहार भोजपुरिया माटी - भाग 1 (काव्य संग्रह), जोहार भोजपुरिया माटी - भाग 2 (लघुकथा संग्रह), जोहार भोजपुरिया माटी -भाग 3 (व्रत कथा संकलन), जोहार भोजपुरिया माटी - भाग 4 (आलोचना संकलन), जोहार भोजपुरिया माटी -भाग 5 (गद्य संकलन), जोहार भोजपुरिया माटी - भाग 6 (किसान विशेषांक), राम कहानी आपन-आपन (आत्मकथा संग्रह), आलोचना के चौपाल (भोजपुरी समालोचना), आलोचना के चौपाल -भाग 2 (भोजपुरी समालोचना)

विशेष - हिन्दी एवं भोजपुरी के पत्रिकाओं में लगातार रचनाओं का प्रकाशन।

सम्मान - अनेक संस्थानन से सम्मानित

स्थायी पता - ग्राम+ नोनार, थाना - पीरो, जिला - भोजपुर (बिहार)।

पत्रचार पता - बी/9, नेताजी नगर, रोड नंबर -2, कांटाटोली, राँची (झारखंड) - 834001

चलभाष - 9102246536

www.bhojpurisahityangan.com

www.bhojpurisahityangan.com

कनक किशोर

पिता – स्वर्गीय चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह

साहित्यिक अवदान –

भोजपुरी – हरियरी रोपत हथेली (काव्य संग्रह), ठाकुर जी के मठिया (कहानी संग्रह), गाँव गावे गीत (काव्य संग्रह), कठपुतरी (अनुदित काव्य संग्रह), अन्हरिया – अँजोरिया (काव्य संग्रह), धधकत सुरुज, पियासल धरती (काव्य संग्रह) रंग-बिरंग-कथेतर (गद्य संकलन) रंग-बिरंग -2 (कथेतर गद्य संग्रह), रंग-बिरंग -3 (कथेतर गद्य संग्रह)

हिन्दी – जिंदगी धुआँ-धुआँ (काव्य संग्रह), छिपी मुस्कानों की दर्द (काव्य संग्रह), हरित उलगुलान (काव्य संग्रह), भाप बन उठती जीवन के गंध (काव्य संग्रह)

संपादन – जोहार भोजपुरिया माटी – भाग 1 (काव्य संग्रह), जोहार भोजपुरिया माटी – भाग 2 (लघुकथा संग्रह), जोहार भोजपुरिया माटी -भाग 3 (व्रत कथा संकलन), जोहार भोजपुरिया माटी – भाग 4 (आलोचना संकलन), जोहार भोजपुरिया माटी -भाग 5 (गद्य संकलन), जोहार भोजपुरिया माटी – भाग 6 (किसान विशेषांक), राम कहानी आपन-आपन (आत्मकथा संग्रह), आलोचना के चौपाल (भोजपुरी समालोचना), आलोचना के चौपाल -भाग 2 (भोजपुरी समालोचना)

विशेष – हिन्दी एवं भोजपुरी के पत्रिकाओं में लगातार रचनाओं का प्रकाशन।

सम्मान – अनेक संस्थानन से सम्मानित

स्थायी पता – ग्राम+ नोनार, थाना – पीरो, जिला – भोजपुर (बिहार)।

पत्रचार पता – बी/9, नेताजी नगर, रोड नंबर -2, कांटाटोली, राँची (झारखंड) – 834001

चलभाष – 9102246536

श्री नर्मदा प्रकाशन
साहित्य सेवा में समर्पित

ISBN 978-93-342-4946-0
9 789334 249460

Rs. 250.00

E-mail : shrinarmadaprakashan@gmail.com